पाठ–8

पूजन

श्याम नारायण पाण्डेय

कवि परिचय

जन्म – 1907 ई.

मृत्यु – 1991 ई.

अपनी ओजस्वी वाणी में वीर रस के अनन्य प्रस्तोता श्याम नारायण पाण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में हुमराव, मऊ गाँव में हुआ। स्वभाव से सात्विक, हृदय से विनोदी और आत्मा से परम निर्भीक स्वभाव वाले पाण्डेय जी के स्वस्थ पुष्ट व्यक्तित्व में शौर्य, सत्त्व और सरलता का अनूठा मिश्रण है। लगभग दो दशकों से अधिक वे हिन्दी कवि सम्मेलनों में मंच पर अत्यन्त लोकप्रिय एवं समादृत रहे हैं।

कवि ने अपनी काव्य रचना के माध्यम से वीर प्रसूता मेवाड़ तथा वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के शौर्य, त्याग, आत्म–बलिदान, स्वातन्त्र्य प्रेम एवं जातीय–गौरव भाव को प्रेरक आधार बनाते हुए मध्य कालीन राजपूती मूल्यों को अत्यन्त श्रद्धा, सम्मान, सहानुभूति और पूजा के छन्द पुष्प अर्पित किये हैं। इन्होंने आधुनिक युग में वीर काव्य की परंपरा को खड़ी बोली में प्रतिष्ठित किया है। मृत्यु से तीन वर्ष पूर्व आकाशवाणी गोरखपुर में अभिलेखागार हेतु उनकी आवाज़ में उनके जीवन के संस्मरण रिकार्ड किये गये हैं। पाण्डेय जी को प्रसिद्ध 'जौहर' महाकाव्य पर देव पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

कृतियाँ

हल्दीघाटी, जौहर, तुमुल, रूपान्तर, आरती, जय हनुमान, आँसू के कण, गोरा–वध।

पाठ परिचय

संकलित काव्यांश लेखक के 'हल्दी घाटी' महाकाव्य से उद्धृत है। इसमें कवि ने देश हित उत्सर्ग करने वाले वीरों के प्रति श्रद्धा भाव अभिव्यक्त करते हुए देव तीर्थों से अधिक पुण्यदायी चित्तौड़ की भूमि को बताया है। स्वाभिमान और स्त्रीत्व की रक्षार्थ जीवित आग को समर्पित वीरांगनाओं के त्याग व बलिदान की गाथा से कवि भारतीय नारी के पूजनीया स्वरूप को प्रतिष्ठित करता है। अजेय दुर्ग चितौड़ के माध्यम से कवि ने शहीदों के प्रति आदर भाव तो अभिव्यक्त किया ही है, साथ ही उसके प्रति आस्थावान बनने का सन्देश भी दिया है।

पूजन

थाल सजाकर किसे पूजने,
चले प्रात ही मतवाले ।
कहाँ चले तुम राम नाम का,
पीताम्बर तन पर डाले ?
कहाँ चले ले चन्दन, अक्षत, बगल दबाये मृग–छाला ?
कहाँ चली वह सजी आरती, कहाँ चली जूही माला ?
ले मौंजी, उपवीत, मेखला, कहाँ चले तुम दीवाने ?
जल से भरा कमंडलु लेकर, किसे चले तुम नहलाने ?
चले झूमते मस्ती से तुम, क्या अपना पथ आये भूल ?
कहाँ तुम्हारा दीप जलेगा, कहाँ चढ़ेगी माला फूल ?
इधर प्रयाग न गंगासागर, इधर न रामेश्वर काशी ।
कहाँ, किधर है तीर्थ तुम्हारा, कहाँ चले तुम संन्यासी ?
मुझे न जाना गंगासागर, मुझे न रामेश्वर, काशी ।
तीर्थराज चित्तौड़ देखने को मेरी आँखे प्यासी ।
अपने अचल स्वतंत्र दुर्ग पर, सुनकर बैरी की बोली ।
निकल पड़ी लेकर तलवारें, जहाँ जवानों की टोली ।
जहाँ आन पर माँ–बहिनों की, जला–जला पावन होली ।
वीर–मंडली गर्वित स्वर से, जय माँ की जय जय बोली ।
सुन्दरियों ने जहाँ देश–हित, जौहर व्रत करना सीखा ।
स्वतंत्रता के लिए जहाँ के बच्चों ने मरना सीखा ।
वहीं जा रहा पूजन करने, लेने सतियों की पद–धूल ।
वहीं हमारा दीप जलेगा, वहीं चढ़ेगी माला, फूल ।
वहीं मिलेगी शांति वहीं पर, स्वस्थ हमारा मन होगा ।
वीरवरों की पूजा होगी, खड्गों का दर्शन होगा ।
जहाँ पद्मिनी जौहर व्रत कर, चढ़ी चिता की ज्वाला पर।
क्षण भर वही समाधि लगेगी, बैठ इसी मृग–छाला पर।
नहीं रही, पर चिता–भस्म तो होगा ही उस रानी का।
पड़ा कही न कहीं होगा ही, चरण चिह्न महारानी का।
उस पर ही ये पूजा के सामान सभी अर्पण होंगे।
चिता–भस्म–कण ही रानी के दर्शन हित दर्पण होंगे ।

शब्दार्थ

पीताम्बर–पीला वस्त्र, अक्षत–चावल,
मृग छाला– हरिन का चमड़ा, मौंजी–मूंज का बना वस्त्र,
उपवीत– जनेऊ, मेखला– साधु का वस्त्र,
गर्वित– गर्व से ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संन्यासी का तीर्थ स्थल कौन सा है?

(क) गंगा सागर (ख) रामेश्वरम्
(ग) चित्तौड़ दुर्ग (घ) काशी

2. पीताम्बर शब्द में कौन सा समास है ?

(क) बहुब्रीहि (ख) द्विगु
(ग) द्वन्द्व (घ) कर्मधारय

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कवि पूजन सामग्री किस जगह पर अर्पित करना चाहता है?
4. संन्यासी क्या–क्या पूजन सामग्री लेकर निकला है?
5. निम्न शब्द के पर्याय लिखिए

तलवार, फूल, मृग, अक्षत, आँख

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. तीर्थराज चित्तौड़ देखने को 'मेरी आँखे प्यासी' पंक्ति से लेखक का आशय स्पष्ट कीजिए।
7. तीर्थ किसे कहते हैं ? धार्मिक भावना के अनुसार प्रमुख तीर्थ कौन–कौन से हैं?
8. 'क्षण भर वहीं समाधि लगेगी' में कवि समाधि लगा कर क्या प्राप्त करना चाहता है?

निबन्धात्मक प्रश्न

9. जौहर व्रत से आप क्या समझते हैं ? पद्मिनी के जौहर की कथा संक्षेप में बताइए।
10. भावार्थ लिखिए–

(क) अपने अचल स्वतन्त्र ..... जय बोली।
(ख) सुन्दरियों ने जहाँ ..... माला फूल।
(ग) क्षण भर वहीं समाधि ..... दर्पण होंगे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. ग

2. घ